By:- Sujata Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

Class - XI
History
Date 29.04.20
Page 1

नव पाषाण काल (Neolithic Age)

नवपाषाणकाल का आरम्भ विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग समय पर आरम्भ हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में 7000 ई० पूर्व से लेकर 4000 ई० पूर्व तक नव पाषाणकाल का आरम्भ माना जाता है। नवपाषाणकाल की सर्वप्रमुख विशेषता थी मानव का आखेट से कृषि की ओर उन्मुख होना। विल ड्यूरेन्ट ने इसे क्रांति की संज्ञा देते हुए कहा है कि एक प्रकार से समस्त मानव इतिहास क्रांतियों से बंधा हुआ है - नव पाषाणकाल में आखेट से कृषि में पदार्पण एवं आधुनिक युग में कृषि से उद्योग में पदार्पण। इन दोनों क्रांतियों के अलावा और किसी क्रांति ने मानव इतिहास पर मूलभूत और वास्तविक प्रभाव नहीं छोड़ा।

*1 आखेट से कृषि और पदार्पण :— नव पाषाण युग में आखेट से कृषि की ओर पदार्पण मानव जीवन की सर्वप्रथम, सर्व महत्वपूर्ण एवं सर्वोपयोगी क्रांति थी। उस क्रांति ने मानव इतिहास को एक नवीन आयाम दिया। संभवतः किसी फसल या फल के कुछ बीज कहीं गिर गये होंगे जब उनसे पौधा बनकर और अत्याधिक फसल या उत्पन्न हुए तब मानव ने इस दिशा में प्रयास कर कृषि कर्म का ज्ञान प्राप्त किया होगा। विद्वानों का मानना है कि लगभग 8000 ई० पूर्व कृषि का विस्तार दक्षिण-पश्चिम एशिया से आरम्भ होकर 6000 ई० पूर्व दक्षिण-पूर्व यूरोप तक पहुँचा और फिर समस्त यूरोप में फैल गया।

प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर पता चलता है कि नवपाषाण-युगमि, मानव गेहूं, मक्का, जौ, जई, मटर एवं मसूर आदि का उत्पादन करने लगे थे। सेब सहित पत्ते छिलके वाले एवं कुछ कड़े छिलके वाले फलों को भी वे उपजाते थे। नव-पाषाण युग के एक गुहा चित्र में एक मानव को दो बैलों की सहायता से हल चलाते हुए चित्रित किया गया है।

*2. पशुपालन का आरम्भ :- पशुपालन के निश्चित प्रमाण हमें नव पाषाण काल से ही मिलते हैं। पशुओं को पालतू बनाने के सर्वप्रथम व प्रारम्भिक साक्ष्य ग्रीक के अरगिसा-मुगला नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं। विद्वानों का मानना है कि कुत्ता सबसे पहला पालतू जानवर था जिसकी हड्डियाँ 8000 ई० पूर्व की है। लगभग 6000 ई० पूर्व बकरी, भेड़, सुअर, गाय एवं बैल को पालतू बनाया गया। घोड़ा सबसे बाद में पालतू बनाया गया।

*3. आवास एवं वस्त्रों का निर्माण :- गृह निर्माण कला के प्रारम्भिक साक्ष्य हमें नव पाषाणयुग से ही मिलता है। कृषि कार्य ने मानव को स्थायी रूप से एक स्थान पर घर बनाकर रहने को बाध्य किया होगा। नवपाषाण काल के मकानों में स्विटजरलैंड में झीलों पर बनाये गये मकानों के साक्ष्य प्रमुख हुए।

नवपाषाणकाल में मानव ने पत्थर की सुई एवं जानवर की खाल को सिलकर वस्त्र बनाना आरम्भ कर दिया था। इसी खाल से मानव ने भेड़ की ऊन व पेड़ों के रेशे बुनकर अपने पहनने के वस्त्र बनाना आरम्भ कर दिया था।

*4. सामाजिक व्यवस्था :- आरम्भिक समाज व्यवस्था के स्थायी प्रमाण हमें नव पाषाण काल से ही मिलते हैं। खेती, कपड़ा और मकान की प्राप्ति ने सामाजिक व्यवस्था को स्थायी आयाम दिया। संभवतः स्त्री-पुरुष के बीच इसी काल में श्रम-विभाजन हो गया था। इस काल में खेती कार्य, आटा पीसने का कार्य कपड़ा एवं बर्तन निर्माण का कार्य संभवतः स्त्रियाँ करती थी। पुरुष कार्य में स्त्रियों के सहायता के साथ-साथ पशुपालन व आखेट करते थे।

*5. मिट्टी के बर्तनों का निर्माण :- संभवतः मानव ने देखा होगा कि आग के पास की मिट्टी सूखकर कड़ी बन जाती है या फिर कभी मिट्टी से लिपि कोई डलियानुमा चटाई आग से जल गई होगी, इससे मिट्टी पककर बर्तन के आकार में आ गयी होगी।

कुछ विद्वानों का मानना है कि इसी काल में पहिये का आविष्कार हो चुका था एवं मनुष्य ने पहिये का प्रयोग मिट्टी के बर्तन बनाने में किया।

*6. हथियार एवं उपकरण :- नव पाषाणकालीन हथियार व उपकरणों में छिर्रियाँ, ढेकली, कुल्हाड़ी, फावड़ा, सीढ़ियाँ, छेनी, हसिये, आरी, मछली पकड़ने के काँटे एवं पहिया प्रमुख है।

*7. धार्मिक अभिरुचि :- सम्भवतः नव पाषाण कालीन मानव की धार्मिक अभिरुचि जाग्रत हो चुकी थी। मिस्र, सीरिया एवं दक्षिण-पूर्वी यूरोप से इस काल की मिट्टी व अस्थियों से निर्मित कुछ नारी मूर्तियाँ प्राप्त हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नव पाषाणकाल में मानव ने कई क्रान्तिकारी आविष्कार किये। नवपाषाणकालीन इस क्रांति का आरम्भ पश्चिम व दक्षिण पूर्वी एशिया से हुआ एवं कालान्तर में यह पूर्व और पश्चिमी देशों की ओर प्रसारित हुआ।

End